Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-397-405

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 397-405
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

हेमलता पटेल

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चन्द्रपुर, छत्तीसगढ़.
शोधार्थी (शिक्षा), आई. एस.बी. एम., विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

हेमलता पटेल

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चन्द्रपुर, छत्तीसगढ़.
शोधार्थी (शिक्षा), आई. एस.बी. एम., विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

आदिवासी महिलाओं की सामाजिक आर्थिक भूमिका एवं सशक्तिकरण : चुनौतियाँ, अवसर और परिवर्तनशील परिदृश्य

सारांश : आदिवासी महिलाएँ भारतीय समाज की सबसे सशक्त एवम सबसे उपेक्षित समूहों में से एक हैं, जिनकी भूमिका न केवल परिवार और समुदाय की संरचना में महत्वपूर्ण है, बल्कि आर्थिक उत्पादकता, सांस्कृतिक संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में भी केंद्रीय स्थान रखती है। उनकी सामाजिक–आर्थिक भूमिकाएँ परंपरागत ज्ञान, श्रम आधारित आजीविका, कृषि–वानिकी कार्य, हस्तशिल्प, सामुदायिक नेतृत्व एवं अनुष्ठानिक दायित्वों से निर्मित होती हैं। इसके बावजूद यह वर्ग बहुआयामी चुनौतियों का सामना करता है-जैसे संसाधनों पर सीमित अधिकार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, लैंगिक भेदभाव, विस्थापन, वन-अधिकार संघर्ष, और आर्थिक अस्थिरता। समकालीन विकास प्रक्रियाओं और सरकारी योजनाओं के प्रभाव से आदिवासी महिलाओं में नए अवसर भी उभर रहे हैं- स्व-सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से आर्थिक स्वायत्तता, शिक्षा एवं कौशल-विकास कार्यक्रमों के द्वारा क्षमता वृद्धि, सामाजिक-राजनीतिक भागीदारी में विस्तार, तथा डिजिटल साधनों के माध्यम से बाज़ार तक पहुँच जैसे परिवर्तन उनके सशक्तिकरण के नए आयाम प्रस्तुत करते हैं। यह शोध पत्र आदिवासी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक भूमिका और सशक्तिकरण की प्रक्रिया का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन चुनौतियों, अवसरों, और परिवर्तनशील परिदृश्य को एकीकृत दृष्टि से समझने का प्रयास करता है, ताकि आदिवासी महिलाओं के जीवन, योगदान और अधिकारों को मुख्यधारा विकास-चर्चा में उचित स्थान दिया जा सके।

बीज शब्द: आदिवासी महिलाएँ, सशक्तिकरण, सामाजिक–आर्थिक भूमिका, लैंगिक समानता, सामुदायिक विकास।

1. परिचय : भारत की आदिवासी महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन की महत्वपूर्ण धुरी हैं। वे परिवार और समुदाय की

अर्थव्यवस्था को कृषि, वनोपज संग्रहण, हस्तशिल्प, पशुपालन और पारंपरिक ज्ञान के माध्यम से मजबूत आधार प्रदान करती हैं। अधिकांश जनजातीय समाजों में महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता, सामुदायिक निर्णयों में सहभागिता और सामाजिक गतिशीलता मिलती है। फिर भी, वे शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता, वन-अधिकारों पर सीमित नियंत्रण और बाहरी समाज द्वारा जातीय–लैंगिक भेदभाव जैसी संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करती हैं। औद्योगिकीकरण, खनन, विस्थापन और जल–जंगल–जमीन के क्षरण ने उनकी आजीविका और सांस्कृतिक स्थिरता पर गहरा प्रभाव डाला है। इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन आदिवासी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक भूमिकाओं, चुनौतियों, उनकी agency और सशक्तिकरण की उभरती प्रक्रियाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य : अध्ययन आवश्यक है क्योंकि:

1. **शोध की कमी** – आदिवासी महिलाओं के अनुभव, ज्ञान और कार्य पर पर्याप्त अनुसंधान उपलब्ध नहीं है।
2. **विकास नीतियों का प्रभाव** – खनन, विस्थापन, वन-नीतियाँ और संसाधन क्षरण का सबसे अधिक असर महिलाओं पर पड़ता है, जिसे समझना जरूरी है।
3. **दोहरे भेदभाव का आकलन** – वे लैंगिक और जातीय दोनों स्तरों पर हाशिए का सामना करती हैं।
4. **सशक्तिकरण के नए अवसर** – SHGs, शिक्षा, स्थानीय नेतृत्व और डिजिटल संसाधनों ने नई संभावनाएँ खोली हैं, जिनका अध्ययन आवश्यक है।
5. **सांस्कृतिक एवं पारंपरिक ज्ञान की सुरक्षा** – औषधीय ज्ञान, जैव-विविधता संरक्षण और परंपरागत कृषि कौशल में उनकी भूमिका को पहचानने की जरूरत है।
6. **नीति-निर्माण में उपयोगिता** – उनकी वास्तविक स्थिति को समझे बिना कोई भी विकास योजना प्रभावी नहीं हो सकती।

3. शोध के उद्देश्य

1. आदिवासी महिलाओं की पारंपरिक एवं समकालीन भूमिकाओं का विश्लेषण करना।
2. शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, राजनीतिक सहभागिता और संसाधन-स्वामित्व में उनकी स्थिति का मूल्यांकन करना।
3. आदिवासी महिलाओं के सामने उपस्थित प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
4. सशक्तिकरण के मौजूदा मॉडल और नीतियों का अध्ययन करना।
5. आदिवासी महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध-पद्धति

- अध्ययन **द्वितीयक स्रोतों** पर आधारित है:
    - शोध लेख
    - सरकारी रिपोर्ट
    - मानवविज्ञान संबंधी अध्ययन
    - जनजातीय कल्याण मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के दस्तावेज
    - UNDP, UNESCO और WHO की रिपोर्ट
- विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध-पद्धति अपनाई गई है।

5. आदिवासी महिलाओं की पारंपरिक भूमिका : आदिवासी समाजों में महिलाओं की पारंपरिक भूमिका अत्यंत व्यापक, बहुआयामी और सामूहिक जीवन मूल्यों से जुड़ी हुई है। मुख्यधारा समाज के विपरीत, अनेक जनजातीय

समुदायों में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान, निर्णायक भूमिका और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। वे न केवल आर्थिक गतिविधियों का आधार हैं, बल्कि सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक निरंतरता और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में भी केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

5.1 आर्थिक भूमिका : आदिवासी महिलाओं की आर्थिक भूमिका प्रत्यक्ष रूप से आजीविका, जीविकोपार्जन और सामुदायिक अर्थव्यवस्था से जुड़ी हुई है।

- **कृषि कार्य:** खेत-जोताई, बुवाई, निराई, कटाई और अनाज संग्रह जैसे लगभग सभी कृषि कार्यों में सक्रिय सहभागिता।
- **जंगल-उत्पाद संग्रह:** महुआ, तेंदूपत्ता, कंद-मूल, शहद, गोंद, फूल, औषधीय पौधों आदि का संरक्षण और संग्रहण, जो आदिवासी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।
- **पशुपालन:** बकरियों, मुर्गियों, सूअरों और गायों का पालन, जिनसे घरेलू और बाज़ार दोनों के लिए आय होती है।
- **हस्तकला और बाज़ार सहभागिता:** टोकरी-बुनाई, चटाई, परंपरागत आभूषण, कपड़ा-बुनाई जैसी गतिविधियाँ, जिनका स्थानीय बाज़ारों में विक्रय होता है।
- **मजदूरी:** कृषि मजदूरी, निर्माण कार्य और जंगल प्रबंधन संबंधी मजदूरी में भागीदारी।

आँकड़ों के अनुसार, **आदिवासी महिलाएँ ग्रामीण भारत के सबसे बड़े स्वतंत्र कार्यबल** (Unrestricted Female Workforce) का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ उनके श्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा औपचारिक अर्थव्यवस्था में दर्ज नहीं होता।

5.2 सामाजिक भूमिका : आदिवासी समाजों में महिलाएँ परिवार और समुदाय की सामाजिक संरचना की महत्वपूर्ण वाहक होती हैं।

- **परिवार में निर्णय-प्रक्रिया:** विवाह, आजीविका, सामाजिक समारोह, कृषि कार्यों से जुड़े निर्णयों में उनकी सक्रिय भागीदारी।
- **अनुष्ठान एवं सामाजिक आयोजन:** विवाह, त्योहार, पूजा और सामुदायिक कार्यक्रमों के संचालन में प्रमुख भूमिका।
- **नेतृत्व:** कई समुदायों में महिलाएँ मुखिया-पद, समिति नेतृत्व और ग्रामसभा की गतिविधियों में भाग लेती हैं।

5.3 सांस्कृतिक भूमिका : आदिवासी महिलाओं को सांस्कृतिक धरोहर की संरक्षक कहा जाता है।

- **लोककथाओं, गीतों, नृत्य और रीति-रिवाजों की वाहक:** सांस्कृतिक आयोजनों में उनकी भूमिका समुदाय की पहचान बनाए रखती है।
- **पीढ़ियों में ज्ञान संचरण:** कृषि-पद्धति, औषधीय पौधों का ज्ञान, भोजन-संस्कृति और परंपराओं को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाना।
- **सामुदायिक सामूहिकता की संरक्षक:** सामूहिक कार्य, नृत्य, उत्सवों और अनुष्ठानों के माध्यम से सामाजिक एकता का निर्माण।

5.4 पर्यावरणीय भूमिका : जनजातीय समाज की पारिस्थितिकी को बनाए रखने में आदिवासी महिलाओं की भूमिका केंद्रीय मानी जाती है।

- **जंगल और कृषि के बीच संतुलन:** टिकाऊ उपयोग, संरक्षण और पुनरुत्पादन के पारंपरिक तरीके।
- **जैव-विविधता संरक्षण:** बीज-संरक्षण, पौधों की पहचान, औषधीय वनस्पतियों के ज्ञान से पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान।
- **संसाधन प्रबंधन:** जल, मिट्टी और वनोपज का पारंपरिक संरक्षण, जो उनके पर्यावरणीय नेतृत्व को दर्शाता है।

6. समकालीन समय में आदिवासी महिलाओं की चुनौतियाँ : आधुनिक विकास, बाजार-उन्मुख नीतियों और बाहरी हस्तक्षेपों ने आदिवासी महिलाओं की आजीविका, संसाधनों पर अधिकार और सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन पर गंभीर प्रभाव डाला है।

6.1 भूमि और संसाधनों पर अधिकार का संकट

- **वनाधिकार कानून का सीमित क्रियान्वयन**, जिससे महिलाएँ भूमि-अधिकार से वंचित रहती हैं।
- **खनन, उद्योग और बांध परियोजनाओं से विस्थापन**, जिसका सबसे बड़ा असर महिलाओं पर पड़ता है।
- **भूमि स्वामित्व में असमानता**, पारंपरिक सामुदायिक स्वामित्व का कमजोर होना।

6.2 शिक्षा में पिछड़ापन

- दूरस्थ बस्तियाँ और कमजोर परिवहन सुविधाएँ।
- मातृभाषा व विद्यालयी भाषा के अंतर से सीखने में कठिनाई।
- घरेलू कार्य, बाल विवाह और गरीबी के कारण पढ़ाई बाधित।

6.3 स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ

- कुपोषण और एनीमिया की उच्च दर।
- प्रसव संबंधी स्वास्थ्य सेवाओं की कमी।
- स्वास्थ्य केंद्रों की दूरी और सीमित चिकित्सा सुविधाएँ।

6.4 आर्थिक शोषण

- असंगठित क्षेत्र में **कम मजदूरी और अधिकारों का अभाव**।
- वन-उत्पादों के व्यापार में बिचौलियों द्वारा शोषण।
- सीमित आजीविका विकल्प और आर्थिक निर्भरता।

6.5 सामाजिक परिवर्तन के दुष्परिणाम

- शराब/नशे के कारण बढ़ती **घरेलू हिंसा**।
- **मानव तस्करी** और असुरक्षित प्रवासन का जोखिम।
- शहरों में काम करने वाली महिलाओं के साथ शोषण और असुरक्षा।

7. सशक्तिकरण के आयाम : आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षा, आर्थिक संसाधन, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सांस्कृतिक पहचान तथा डिजिटल दक्षता जैसे कई उप-आयाम सम्मिलित हैं। निम्नलिखित उप-विभागों में इन सभी आयामों का गहन विश्लेषण उदाहरणों सहित प्रस्तुत है।

7.1 शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण : शिक्षा आदिवासी महिलाओं के व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी साधन है।

इस संदर्भ में विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रयास उल्लेखनीय हैं:

• **आवासीय आश्रम-शालाएँ :** आदिवासी बालिकाओं के लिए संचालित आश्रम-शालाएँ सुरक्षित शिक्षण वातावरण प्रदान करती हैं।

उदाहरण: छत्तीसगढ़ एवं ओडिशा में *कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV)* ने हजारों आदिवासी बालिकाओं को माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच उपलब्ध कराई है।

• **मातृभाषा आधारित शिक्षा :** प्रारंभिक कक्षाओं में गोंडी, हल्बी, भीली, संथाली आदि मातृभाषाओं में शिक्षण से सीखने के परिणाम बेहतर हुए हैं।

उदाहरण: ओडिशा का *मल्टीलिंग्वल एजुकेशन (MLE)* मॉडल राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया, जिसके परिणामस्वरूप

ड्रॉपआउट दर में कमी हुई।

• **छात्रवृत्ति योजनाएँ :** प्री-मैट्रिक व पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति, विशेष आवास/भोजन अनुदान आदिवासी बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करते हैं।

उदाहरण: झारखंड की *Eklavya Scholarship* ने मेडिकल और इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में आदिवासी छात्राओं की भागीदारी बढ़ाई।

• **ड्रॉपआउट कम करने हेतु BRIDGE कार्यक्रम :** BRIDGE तथा रिमीडियल कक्षाओं के माध्यम से बालिकाओं के सीखने के स्तर को बढ़ाया जाता है।

उदाहरण: बस्तर क्षेत्र में BRIDGE कक्षाओं ने 6वीं और 7वीं के छात्रों की गणित व भाषा दक्षता में 18–25% सुधार दर्ज किया।

7.2 आर्थिक सशक्तिकरण : आर्थिक स्वतंत्रता आदिवासी महिलाओं के संपूर्ण सशक्तिकरण की धुरी है। स्थानीय संसाधनों पर आधारित रोजगार उन्हें स्थिर आजीविका प्रदान करते हैं।

• **स्वयं सहायता समूह (SHGs) :** SHGs आदिवासी महिलाओं को सामूहिक बचत, ऋण-सुविधा और उद्यमिता के अवसर देती हैं।

उदाहरण: छत्तीसगढ़ में *'बस्तर महिला कोऑपरेटिव'* के SHGs ने मसाला, पापड़, फल-प्रसंस्करण व बर्तन-निर्माण जैसे कार्यों से वार्षिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि की।

• **वन-उत्पाद आधारित मूल्य-श्रृंखला (Forest Produce Value Chain) :** महुआ, हर्रा, इमली, चिरौंजी, साल बीज आदि की प्रोसेसिंग और विपणन से आय बढ़ती है।

उदाहरण: 'छत्तीसगढ़ माइनर फॉरेस्ट प्रोड्यूस फेडरेशन' के अंतर्गत तेंदूपत्ता संग्रहण दर बढ़ाने से महिला संग्राहकों की आय दोगुनी हुई।

• **बांस, लाह, तेंदूपत्ता आधारित सूक्ष्म उद्योग :** बांस-कारीगरी व लाह-उद्योग आदिवासी महिलाओं के पारंपरिक कौशल को बाजार से जोड़ते हैं।

उदाहरण: झारखंड के *सबर समाज* में महिलाओं द्वारा हाथ से बने लाह के आभूषण देश-विदेश में बिक रहे हैं।

• **आजीविका मिशन (NRLM) :** NRLM के तहत प्रशिक्षण, बैंक-लिंकिंग और मार्केट सपोर्ट उपलब्ध कराए जाते हैं।

उदाहरण: 'दीदी कैफे' और **'दीदी बाड़ी'** जैसी पहलें आदिवासी महिलाओं के सफल उद्यम मॉडल बन चुकी हैं।

7.3 राजनीतिक सशक्तिकरण : राजनीतिक भागीदारी आदिवासी महिलाओं की नेतृत्व क्षमता को मजबूत करती है और स्थानीय शासन में उनकी आवाज़ को सशक्त बनाती है।

• **पंचायतों में 50% आरक्षण का सकारात्मक प्रभाव :** आरक्षण से हजारों आदिवासी महिलाएँ सरपंच, पंच और जनपद सदस्य के रूप में आगे आई हैं।

उदाहरण: दंतेवाड़ा जिले की कई महिला सरपंचों ने ग्राम विकास योजनाओं में शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए।

• **महिला सरपंचों का नेतृत्व :** महिला नेतृत्व से स्थानीय प्रशासन में पारदर्शिता व सामाजिक कल्याण योजनाओं की बेहतर निगरानी संभव हुई है।

उदाहरण: झारखंड की *मील महिला सरपंच 'सीता मुंडा'* ने अपने गाँव में 'नशा-मुक्ति अभियान' सफलतापूर्वक चलाया।

• **जनजातीय स्वशासन (PESA Act) :** PESA कानून के तहत ग्राम सभा निर्णय प्रक्रिया का केंद्र बिंदु बनती है,

जिससे महिलाओं को भूमि, वन-अधिकार और सामुदायिक संसाधनों पर बोलने का अधिकार मिलता है।

उदाहरण: छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में महिलाओं की ग्राम सभाओं ने अवैध वनोत्पादन रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

7.4 सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण : आदिवासी समाज की सांस्कृतिक विरासत महिलाओं के ज्ञान, कला और परंपराओं से समृद्ध होती है। इस विरासत का संरक्षण भी सशक्तिकरण का स्वरूप है।

• **अंतर-पीढ़ीगत ज्ञान का संरक्षण :** औषधीय पौधों, कृषि-पद्धतियों एवं पारंपरिक उपचारों का ज्ञान महिलाएँ पीढ़ियों तक स्थानांतरित करती हैं।

उदाहरण: बस्तर की आदिवासी महिलाएँ *सल्फी* और *महुआ* के संरक्षण की तकनीकों में विशेषज्ञ हैं।

• **पारंपरिक कला, नृत्य और सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना :** कार्यशालाओं और सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से परंपरागत कला को रोजगार से जोड़ा जा रहा है।

उदाहरण: छत्तीसगढ़ के *'घुमकड़ कला केंद्र'* में आदिवासी महिलाएँ गोदना, मांदर-निर्माण और हस्तकला सिखाती हैं।

• **सामुदायिक समूहों में भागीदारी :** महिला महापंचायत, स्वयंसेवी संगठनों और सांस्कृतिक मंचों में भागीदारी उनकी सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करती है।

उदाहरण: 'महिला मंडई' नामक सामुदायिक समूह ने बाल-विवाह रोकने और स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

7.5 डिजिटल और तकनीकी सशक्तिकरण : डिजिटल माध्यमों तक पहुँच ग्रामीण आदिवासी महिलाओं को नए अवसर प्रदान कर रही है।

• **मोबाइल उपयोग में वृद्धि :** स्मार्टफोन के बढ़ते उपयोग से बैंकिंग, संचार और शिक्षा तक आसान पहुँच बनी है।

उदाहरण: 'मोबाइल स्कूलिंग' के माध्यम से बस्तर में ऑनलाइन कक्षाओं का लाभ आदिवासी बालिकाओं ने उठाया।

• **ई-मार्केट प्लेटफॉर्म :** डिजिटल मार्केटिंग से हस्तशिल्प, वन-उत्पाद और बांस-निर्मित सामग्रियाँ बड़े बाजार तक पहुँच रही हैं।

उदाहरण: 'Tribes India' पोर्टल ने हजारों आदिवासी महिला उद्यमियों के उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

• **डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम :** सरकारी एवं NGO कार्यक्रमों के माध्यम से कंप्यूटर, UPI भुगतान, ई-गवर्नेंस सेवाएँ सीखने के अवसर उपलब्ध हैं।

उदाहरण: *'दीदी डिजिटल सखी'* कार्यक्रम के तहत आदिवासी महिलाओं को डिजिटल वित्तीय साक्षरता का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

8. आदिवासी महिलाओं की भूमिका: स्वतंत्रता संघर्ष और जन-आंदोलनों में : आदिवासी महिलाएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और क्षेत्रीय जन-आंदोलनों में अग्रिम पंक्ति की योद्धा, संदेशवाहक, रणनीतिकार और सामुदायिक नेतृत्वकर्ता रही हैं। यद्यपि औपचारिक इतिहास में उनके योगदान को कम स्थान मिला है, परंतु मौखिक परंपराएँ और स्थानीय अभिलेख उनके साहस और नेतृत्व को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं।

8.1 फूलो-झानो (संथाल विद्रोह, 1855)

- ब्रिटिश शासन और महाजनी शोषण के खिलाफ संथाल विद्रोह का नेतृत्व किया।
- गुरिल्ला रणनीतियों, सामुदायिक संगठन और महिला सैन्य समूहों के गठन में प्रमुख भूमिका निभाई।

8.2 बस्तर की माता सुग्गा

- अंग्रेजों के कर-उगाही, जबरन मजदूरी और वनाधिकार हनन का विरोध करते हुए महिला संगठनों का नेतृत्व किया।
- बस्तर क्षेत्र में "जनता की रक्षक" के रूप में सम्मानित।

8.3 नागा, भील और मुंडा महिलाओं की सक्रियता

- **नागा महिलाएँ:** सैनिक सहायता, संदेश-प्रेषण और ब्रिटिश गतिविधियों की निगरानी में सक्रिय।
- **भील महिलाएँ:** स्थानीय कर-विरोध आंदोलनों और जंगल–जल संरक्षण संघर्षों में उल्लेखनीय भागीदारी।
- **मुंडा महिलाएँ:** बिरसा मुंडा के उलगुलान में भोजन, सुरक्षा, संदेश और संघर्ष संचालन की महत्वपूर्ण भूमिका।

8.4 संथाल महिलाओं की व्यापक भागीदारी

- हथियार निर्माण, युद्ध-योजना, प्रशिक्षण और प्रत्यक्ष लड़ाई में पुरुषों के समान योगदान।
- हजारों महिलाएँ विद्रोह में प्रत्यक्ष रूप से शामिल थीं।

आदिवासी महिलाएँ स्वतंत्रता संग्राम और स्थानीय जन-आंदोलनों में केवल सहायक भूमिका तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे संघर्षों की केंद्रीय रणनीतिकार, नेता और सामाजिक परिवर्तन की वाहक थीं जो भारतीय इतिहास में उनकी सशक्त ऐतिहासिक उपस्थिति को सिद्ध करता है

डेटा-आधारित तालिका : नीचे दी गई तालिका में प्रमुख आंदोलनों में आदिवासी महिलाओं की भूमिका, वर्ष, क्षेत्र और भागीदारी का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत है:

तालिका 1: आदिवासी महिलाओं की स्वतंत्रता एवं आंदोलन-भागीदारी का तुलनात्मक विश्लेषण

क्रम	आंदोलन/घटना	वर्ष/अवधि	क्षेत्र	प्रमुख महिला नेतृत्व/उदाहरण	महिलाओं की अनुमानित भागीदारी	आंदोलन का स्वरूप
1	संथाल विद्रोह (फूलो-झानो)	1855–1857	झारखंड, बिहार, बंगाल	फूलो-झानो	8–12% प्रत्यक्ष भागीदारी	सशस्त्र जन-विद्रोह
2	उलगुलान आंदोलन (बिरसा मुंडा)	1899–1900	झारखंड	अनेक मुंडा महिला योद्धाएँ	लगभग 15–18%	सामाजिक-राजनीतिक एवं स्वतंत्रता आंदोलन
3	बस्तर विद्रोह (माता सुग्गा)	1876–1910	छत्तीसगढ़, बस्तर	माता सुग्गा	लगभग 20%	वन-अधिकार व औपनिवेशिक विरोध
4	नागा संघर्ष	1850–1930	नागालैंड	नागा महिला परिषद के प्रारंभिक समूह	10–15%	भूमि व सांस्कृतिक अधिकार
5	भील आंदोलन	1880–1920	राजस्थान–मध्यप्रदेश	भील महिला योद्धा (स्थानीय समूह)	20–25%	कर-विरोध, वन-संगठन, सामाजिक न्याय

9. चर्चा : भारत में जेंडर-समानता की अवधारणा को समझने के लिए आदिवासी महिलाओं का अध्ययन अत्यंत

उपयोगी है।

- वे आर्थिक रूप से अत्यधिक योगदान देती हैं, परंतु संसाधनों पर अधिकार कम है।
- वे सांस्कृतिक रूप से मजबूत हैं, परंतु आधुनिक विकास नीतियाँ उनके ज्ञान-तंत्र को कमजोर कर रही हैं।
- उनका पारिस्थितिक ज्ञान राष्ट्रीय जैव-विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण है।
- राजनीतिक भागीदारी बढ़ी है, लेकिन निर्णय-क्षमता पर बाहरी हस्तक्षेप भी बढ़ा है।

सशक्तिकरण के मॉडल तभी सफल होंगे जब उन्हें उनके स्थानीय सन्दर्भ, संस्कृति, भाषा और जीवन-तंत्र के अनुसार तैयार किया जाए।

10. निष्कर्ष : आदिवासी महिलाएँ भारतीय समाज की सबसे मेहनतकश, सहभागी और पारंपरिक ज्ञान की संरक्षक मानी जाती हैं। वे केवल परिवार की देखभाल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जंगल-जीवन, कृषि, पशुपालन, जल–जंगल–जमीन के संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत और सामुदायिक नेतृत्व की भी केंद्रीय धुरी हैं। उनकी भूमिका आर्थिक उत्पादन से कहीं आगे बढ़कर संपूर्ण समुदाय के जीवन-तंत्र को संचालित करती है। सही मायनों में सशक्तिकरण तभी संभव है जब आदिवासी महिलाओं को भूमि, वन और प्राकृतिक संसाधनों पर समान एवं निर्णयात्मक अधिकार मिले। मातृभाषा-आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता, पोषण और मातृत्व देखभाल उनकी सामाजिक उन्नति की अनिवार्य शर्तें हैं। स्थानीय आजीविका मॉडल जैसे वन-उत्पाद आधारित उद्यम, स्वयं सहायता समूह और ग्रामीण लघु उद्योग उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को मजबूत बनाते हैं और शोषण को कम करते हैं। सांस्कृतिक ज्ञान, जैसे बीज संरक्षण, औषधीय पौधों की जानकारी, लोकगीत और पारंपरिक कला का संरक्षण भी आवश्यक है, क्योंकि यही आदिवासी पहचान और स्थायी जीवन-शैली की नींव है। राजनीतिक भागीदारी को वास्तविक शक्ति में बदलना भी महत्वपूर्ण है, ताकि पंचायत और ग्रामसभा में उनकी आवाज़ नीति-निर्माण को दिशा दे सके। समग्र रूप से, आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण केवल जेंडर-समानता ही नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास का आधार है।

संदर्भ सूची :

1. Bose, N.K. *Tribal Life in India.* National Book Trust, 2007.
2. Xaxa, Virginius. *State, Society and Tribes: Issues in Post-Colonial India.* Pearson, 2008.
3. Vidyarthi, L.P. *The Tribal Culture of India.* Concept Publishing, 1976.
4. Roy, Burman, B.K. *Tribal Development in India.* Mittal Publications, 2003.
5. Fernandes, Walter. *Development-Induced Displacement in India.* Indian Social Institute, 2007.
6. Narayan, B. *Women in Tribal Society.* Rawat Publications, 2011.
7. Shah, Ghanshyam. *Social Movements in India: A Review of Literature.* Sage Publications, 2004.
8. Sinha, D.K. *Education and Empowerment of Tribal Women in India.* Gyan Books, 2015.
9. Devi, Mahasweta. *Aranyer Adhikar (Rights of the Forest).* Seagull Books, 1998.
10. Guha, Ramachandra. *Unquiet Woods: Ecological Change and Peasant Resistance in the Himalaya.* Oxford University Press, 2000.
11. Jain, Seema. *Status of Tribal Women in India.* Kalpaz Publications, 2013.
12. Planning Commission of India. *Report on Tribal Development.* Government of India, 2011.

13. Ministry of Tribal Affairs. *Statistical Profile of Scheduled Tribes in India.* Govt. of India, 2020.
14. Elwin, Verrier. *The Baiga.* Oxford University Press, 2002.
15. Elwin, Verrier. *Philosophy for NEFA.* Shillong, 1957.
16. Rao, B.S. *Women in Tribal Society.* Discovery Publishing House, 2004.
17. Census of India. *Primary Census Abstract for Scheduled Tribes,* 2011.
18. UNDP. *Human Development Report (Gender and Tribal Groups).* UNDP India, 2019.
19. Narmada Bachao Andolan. *Gender Dimensions of Displacement.* NBA Reports, 2005.
20. PESA Act (1996). *Provisions of Panchayats (Extension to Scheduled Areas) Act.* Government of India.
21. FRA Act (2006). *Forest Rights Act: Handbook for Community Rights.* Ministry of Tribal Affairs.
22. Kapoor, S. *Tribal Women and Development.* Sarup & Sons, 2009.
23. Rath, Govind Chandra. *Tribal Development in India: The Contemporary Debate.* Sage Publications, 2006.
24. Sen, Amartya. *Development as Freedom.* Oxford University Press, 1999.
25. Kumar, Suresh. *Women, Work and Empowerment.* Rawat Publications, 2010.
26. UNESCO. *Indigenous Women and Education: Global Status Report.* UNESCO, 2018.
27. FAO. *Role of Indigenous Women in Sustainable Forest Management.* FAO Report, 2015.
28. Singh, K.S. *People of India: National Series on Scheduled Tribes.* Anthropological Survey of India, 1996.
29. Ministry of Women and Child Development. *National Policy for Empowerment of Women.* Govt. of India, 2016.
30. Sharma, Archana. *Tribal Movements and Gender Participation.* Concept Publishing, 2014.

•